11. मूल्यांकन व निष्कर्ष:-

जल जीवन की अनिवार्यता है। इतिहास इस बात का गवाह है कि अधिकतर सभ्यातायें नदी, तालाबों के किनारे ही जन्मी है और अपने को विकसित किया। प्राचीन काल में जल की कोई कमी नहीं थी। इसका सबसे प्रमुख कारण जनसंख्या का कम होना व लोगों का जल के प्रति आस्था का भाव का होना था, लेकिन वर्तमान समय में स्थिति ठीक विपरीत हो रही है। मनुष्य अपने लाभ के लिये जल का अनियन्त्रित व अविवेक पूर्ण ढ़ंग से निरन्तर दोहन करता चला जा रहा है। मनुष्य भविष्य में आने वाले जल संकट की भयावता को अनदेखा करता चला जा रहा है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमारे सामने जल संकट व जल प्रदूषण के रूप में विद्यमान है।

यदि यह अविवेक पूर्ण कार्य इसी प्रकार चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं है, जब मनुष्य को शुद्ध जल की एक-एक बूंद को तरसना पड़ेगा। जल प्रदूषण की समस्या मानव के अविवेक पूर्ण कार्यों का नतीजा है। मानव जल प्रदूषण के लिये प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी है।

कहा जाता है कि "जल ही जीवन है" जरा सोचिए अगर जल ही नहीं रहेगा तो क्या सृष्टि का अस्तित्व रहेगा?

यदि हम लोग जल को इसी तरह बर्बाद करते रहे तो भविष्य में आने वाली पीढ़ी को क्या मिलेगा और उनके लिए हम क्या छोड़ रहे हैं?

आज समय की माँग है कि जल प्रदूषण

Scanned with CamScanner

जैसी विभिषीका को ... करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जीवन-शैली व प्राथमिकताएं इस प्रकार निर्धारित की जाय कि अमृत रुपी जल की एक बूंद भी व्यर्थ न जाये।

समाज के सभी वर्गों को एक साथ मिलकर कदम उठाने चाहिए ताकि समय रहते जल प्रदूषण को नियन्त्रित किया जा सके। प्रकृति की वर्तमान स्थिति मॉग करती है कि पर्यावरण के सन्तुलन बनाये रखने में कोई कसर नहीं छोड़ी जाय।

यदि हमें अपना व आने वाली पीढ़ी के अस्तित्व को बचाना है तो हमें शुद्ध जल को प्रदूषित होने से बचाना होगा।

जल को प्रदूषित होने से बचाना वर्तमान सदी की सबसे बड़ी आवश्यकता है। हमें यह तथ्य भली-भांति समझ लेना चाहिए कि जल का कोई विकल्प नहीं है। यदि शुद्ध जल है तो जीवन है। बिना शुद्ध जल के हम पृथ्वी पर जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते।

यदि हमें सृष्टि के अस्तित्व को बचाना है, तो शुद्ध जल को प्रदूषित होने से बचाना होगा।

निष्कर्ष रुप में हम कह सकते हैं कि वर्तमान समय में लोगों में जल प्रदूषण के प्रति जागरुकता में कमी है। इसलिये जल प्रदूषण के प्रति लोगों को जागरुक करना हमारी पहली आवश्यकता होनी चाहिए। आज हम सभी को संकल्प लेना होगा कि धरती में शुद्ध जल का भण्डार सदा भरा रहे ताकि आने वाली पीढ़ी को शुद्ध जल के रुप में जीवन दे सकें।

Scanned with CamScanner

12. परिशिष्ट :-

A- पुस्तकें

1. पर्यावरण शिक्षा - हरिश्चन्द्र व्यास
2. पर्यावरण व उसके संसाधनों का संरक्षण
3. पर्यावरण अध्ययन - डॉ० राजेश्वरी शर्मा

B. पत्रिकाएं -

1. कुरुक्षेत्र जून 2005
2. कुरुक्षेत्र जून 2006

Scanned with CamScanner